सन् 1991 में ''ब्यावर का इतिहास'' लिखने पर अजमेर संभागीय आयुक्त श्रीमति अलका काला से पुरस्कार ग्रहण करते हुए बादशाह वासुदेव मंगल छाया: प्रवीण मंगल

ब्यावर का इतिहास

वासुदेव मंगल
19, गोपालजी मोहल्ला
ब्यावर (राज०)

अरावली की सुरम्य उपत्यकाओं में कई नगर, शहर राजस्थान प्रदेश में बसे हुए हैं। जैसे अलवर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, केलवाड़ा, सिरोही, आबूरोड़ इनमें से ब्यावर शहर 155 साल पूर्व स्कोटिस कर्नल एलफ्रेड डिक्सन द्वारा क्रोस की आकृति पर बसाकर डिक्सन छत्री वर्तमान में पांच बत्ती से एक परकोटे का उसी रुप में निर्माण कराया। यह अथून खान, चांग खान से बचाने के लिये बनाया गया था। इस परकोटे की लम्बाई 10569 फीट है। इसका माप 884161 क्यूबिक फीट है। इसको बनाने में उस समय रुपये 23840/- कीमत लगी। इस शहर की नींव कर्नल डिक्सन ने 1 फरवरी सन् 1836 को प्रात: 10 बजकर 10 मिनट पर अजमेरी गेट पर रक्खी। यह हर तरह से महफूज जगह है। बह+यावर का अर्थ है अच्छी किस्मत। डिक्सन 144 मेरवाड़ा बटालियन के सरबराह थे जिन्होंने फौजी छावनी बसाई इनके बैरकों में आज पुराना पावर हाऊस, मेगजीन की जगह सदर थाना कायम है। फौजी सफाखाना आजकल सिपाहियों के क्वार्टर है। फौजी अफसरों के बंगले आजकल जंगलात का दफ्तर, दूसरे में अमृतकौर अस्पताल का स्टोर रूम है, तीसरे में नवरंग नगर आबाद हो गया है। चौथे में चम्पानगर बस गया है। पांचवे में मुहम्मदअली स्कूल का बोर्डिग हाऊस, छठे में ईसाईयों ने कब्जा कर रक्खा है। टेकरी वाले बंगले में अंग्रेजी प्राइमरी स्कूल चलता है। यहां पर उस समय बहादुर पहाड़ी जाति रहती थी जिनका काम पहाड़ों से पट्टियां निकालना, जानवर पालना और खेती करना था। मेरवाड़ा बटालियन ने प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की के मैदान में जंग जीतने की खुशी में एक तोप व तुर्की के फौजी कमाण्डर का अस्थि-पंजर लाये। तोप नगर परिषद् के सामने रक्खी। अस्थि पंजर हालेण्ड म्युनिसिपल पटेल स्कूल में रक्खा। इस बटालियन की यादगार आज भी चांदमल मोदी वाचनालय के सामने बगीचे में संगमरमर से बनी हुई है। डिक्सन साहब अजमेरी दरवाजे के बांई तरफ एक नोहरे (वर्तमान में बन्शी भवन) में रहा करते थे। बेगम साहिबा पठान कौम से ताल्लुक रखती थी। बिचड़ली गांव के नजदीक ही नए नगर की बुनियाद रख दी गई। अहमदाबाद से दिल्ली तक जब रेल्वे लाईन डाली गई तो इस भाग का लाईन

के पास बड़ा गांव ब्यावर पड़ता था इसलिये इस स्टेशन का नाम ब्यावर रक्खा गया। स्टेशन के पास बसा नया नगर तरक्की करते करते बहुत बड़ा तिजारती शहर बन गया और समय के साथ साथ नया नगर ब्यावर हो गया और खास ब्यावर गांव पुराना ब्यावर हो गया है। अंग्रेजी फौज को हर तरह से महफूज रखने के लिये ब्यावर जगह ही माकूल समझी गई जहां से राजस्थान की रियासतों पर नजर रखी जा सके। इस भाग की सरकारी जुबान उस समय उर्दू थी। यह भाग फौजी इलाका करार दिया गया था। पहाड़ी इलाका था। पैदावार कम होती थी। अतः गांव के जवां मर्द फौज में अक्सर भर्ती हुआ करते थे जो सिलसिला आज भी इस इलाके में बरकरार है। फौजी लिहाज से ब्यावर की बड़ी अहमियत थी। डिक्सन साहब ने यहां फौजी छावनी स्थापित की। इन्तजामी मामलात अजमेर में तय किये जाते थे। लेकिन फौजी मामलात का केन्द्र ब्यावर ही था। चीफ कमिश्नर (राज्यपाल) अजमेर मेरवाड़े का अजमेर में रहता था जो सारे अहकामात सभी रियासतों के लिये अजमेर से ही जारी किये जाते थे।

ब्यावर राजस्थान का मेन चेस्टर कहलाता था। यहां पर कपड़े की तीन मिले हैं। कई गांठें बांधने के प्रेस और रुई पिन्दने की मशीनें लगी हुई थी यह जिनिंग फैक्ट्री कहलाती थीं। बीड़ी बनाने के बड़े कारखाने हैं जिनमें हजारों औरतें आज भी काम करती है। फैक्ट्रियों की जगह अब कई कॉलोनियां बन गई है। महादेवजी की छतरी के पास सट्टा बाजार था जहां हजारों रुपयों का सट्टा प्रतिदिन होता था। ब्यावर शहर व्यापार में राजस्थान में सबसे आगे था। ऊन, रूई, अफीम की यहां पर मण्डियां थीं। सारे भारत में पहले नम्बर पर फाजिल्का (अब पंजाब में) और दूसरे नम्बर पर ब्यावर की ऊन की मण्डी थी। यहां से सारे राजस्थान में रूई, कपड़ा, बीड़ियां, सीने का धागा, अभ्रक, बेरियल, सुरमा दूसरे भागों को भेजा जाता था। ऊन और भोडल विलायत भेजी जाती थी। इसलिये बहुत सी विलायती कम्पनियों ने अपने दफ्तर यहां खोल रक्खे थे। इसलिये ब्यावर सारे हिन्दुस्तान में मशहूर था। यहां की तिलपट्टी सारी दुनिया में मशहूर है।

ब्यावर में गलियों और बाजारों में थोड़ी थोड़ी दूरी पर चौपड़ है जिनकी संख्या 30 से 35 हैं। सब गलियों की बनावट समानान्तर है। पहले अजमेरी दरवाजे से मेवाड़ी दरवाजे और चांद दरवाजे से तेजा चौक तक बाजार था। मगर अब हर गली बाजार बन गई है। अब भी बाजार में डिक्सन साहब की छतरी का चौराहा है। इसके उत्तर में पंसारी बाजार, फतेहपुरिया बाजार, दक्षिण में कपड़ा बाजार, पूरब में लोहा बाजार व तेजा चौक व पश्चिम में प्याली बाजार है। पुराने जमाने में छतरी के पश्चिम में दाहिने हाथ वाली हवेली में पुलिस थाना था जो वर्तमान में गुजरमल भंवरलाल का कटला कहलाता है और पूरब वाली हवेली तहसील थी जो आजकल उदयचन्द बजाज की मिल्कियत है। अजमेरी दरवाजे के बाहर जेल खाना था जो आज तहसील है डिक्सन साहब की अदालत वहीं थीं जहां पर आज अदालत स्थित है। डाकघर भी वहीं है जो पहले था। पहले हर दरवाजे के अन्दर पुलिस की चौकी थी जो शहर की निगरानी करती थी जो आज भी अजमेरी दरवाजे को छोड़कर तीनों दरवाजों पर देखी जा सकती है रात को सब दरवाजे और खिड़कियां बन्द कर दी जाती थी। शहर के बाहर उत्तर पश्चिम में कई जिनिंग फैक्ट्रियां रूई पीन्दने के कई कारखाने, गांठ बांधने के कई प्रेस, रूई और ऊन रखने के गोदाम थे जो कालान्तर में किशनगंज, महावीरगंज प्रतापनगर, न्यू बैंक कॉलोनी बन गई है। शहर के बाहर चारों तरफ थोड़ी दूरी पर

बगीचियां थीं जो आज भी मौजूद हैं। शहर के आसपास हर कौम और जाति के आदमी अपने अपने मजहब को मानते हैं। इनमें रावत अपने आपको राजपूत कहते हैं। हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखते हैं। मेहरात, काठात, चीते, कायम खानी इस्लाम धर्म को मानने वाले हैं। इनकी एकता काबिले तारीफ है। ब्यावर शहर की पृष्ठ भूमि में 84 गांव हैं। गांव वाले सर पर लाल रंग का साफा, सफेद धोती, सफेद बखतरी, पैर में अलाऊद्दीन शाही जूते पहिनते हैं। मेवाड़ी और मारवाड़ियों बोलियों से मिली हुई मेरवाड़ी बोलियां बोलते हैं। शादी, ब्याह, रस्मों, रिवाज, चाल, ढाल, खान, पीन रहन सहन में कोई फर्क नहीं। सब लोग हँसी खुशी से जीवन बसर करते हैं। ब्यावर शहर और देहातियों को मिलाने के लिये डिक्सन साहब ने तेजा मेला शुरू किया था प्यार और मोहब्बत को बढ़ाने के लिये, ब्यावर शहर में धुलण्डी के दूसरे रोज बादशाह मेला आरम्भ किया इस इलाके में बहुत से ऐसे आदमी मिल जायेंगे जो दोनों धर्मों को मानते हैं। लोग ईद, बकरा ईद, होली, दिवाली, मुहरर्म वगैरह मिलकर मनाते हैं। इन इलाकों में आपको कई ऐसे जोड़े मिल जायेंगे जिनकी मां रावतों में है तो बाप मेहरात कौम का है और बाप रावत हैं तो माँ मेहरातों की है। रावत और मेहरात कौम हर त्यौहार को मिल जुलकर मनाते हैं। यह है गांव की एकता का नमूना। ब्यावर के शूरवीरों का केन्द्र था श्यामगढ़, झाक, लूलवा, होली के त्यौहार पर जगह जगह अहेड़ा चढ़ाया जाता था। श्यामगढ़ का किला और कुण्ड महान स्वतन्त्रता सेनानियों की तपोभूमि रही है जिनमें से मुख्य नानाजी फडनवीस, तात्यां टोपे, रास बिहारी बोस, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, मन्मथनाथ गुप्त, केसरीसिंह बारहठ, जोरावरसिंह बारहठ, प्रतापसिंह बारहठ, ठाकुर गोपालसिंह खरवा, विजयसिंह पथिक, अर्जुनलाल सेठी थे। इसी तरह ब्यावर शहर कई महान सपूतों की कर्मस्थली रहा जिनमें से मुख्य सेठ दामोदरदास राठी, सेठ घीसूलाल जाजोदिया, स्वामी कुमारानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि थे। इसी प्रकार ब्यावर शहर कई राजनीतिज्ञों का प्रक्षिक्षण केन्द्र रहा जिनमें से मुख्य है मोहनलाल सुखाडिया जयनारायण व्यास व भैरोसिंह शेखावत। पहले ब्यावर की जन-संख्या कुल 21 हजार थी। लेकिन अब ब्यावर की जन संख्या 1 लाख 21 हजार है। आज भी ब्यावर में सेठ राठी की हवेली, सेठ चम्पालाल रामस्वरूप की हवेली, सेठ कुन्दनमल लालचन्द की हवेली, नवाब साह का अन्सारिया, मेडीकल हाल, सेठ मजहर की ड्रीमलेण्ड इमारत देखने योग्य है। डिक्सन साहब का मकबरा छावनी के पास रेल्वे फाटक के पास स्थित ईसाईयों के कब्रिस्तान में है तथा बेगम का मकबरा अजमेरी दरवाजे के बाहर रामद्वारे के सामने अमले के पास मौजूद हैं। पुराना श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय व चित्रालय आज भी हरिप्रसादजी अग्रवाल के पास सुरक्षित मौजूद है जिसमें ब्यावर के इतिहास का विहंगम दृश्य देखने को मिली जायेगा। आज ब्यावर ने औद्योगिक दृष्टि से पर्याप्त तरक्की की है। वर्तमान में ब्यावर शहर के बाहर चारों तरफ अजमेर रोड़ पर दो सौ से ज्यादा सीमेन्ट जालियां व एस्बेस्टोज पाईप बनाने की फैक्ट्रियां है। स्टोन, टाईल्स की फैक्ट्रियां हैं। ग्राईडिंग स्टोन की कई फैक्ट्रियां है। साइजिंग की कई फैक्ट्रियां है। प्रिन्टिंग डाईंग व हैण्डलूम, पावर लूम की अनेक फैक्ट्रियां हैं। प्लास्टिक पेपर बैग की फैक्ट्रियां है। तात्पर्य यह है कि लघु उद्योग और व्यवसाय का यह केन्द्र है। यहां पर कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसीलिये बांगड़ समूह द्वारा श्री सीमेन्ट लिमिटेड यहां से 7 मील दूर अन्धेरी देवरी गांव के पास मसूदा रोड पर लगाया गया है जहां पर बीस हजार से ज्यादा सीमेन्ट की बोरियां प्रतिदिन भरकर तैयार की जाती हैं जो प्रतिदिन पांच लाख रु.

तकरीबन सरकार को राजस्व एक्साईज के रुप में देती है, और डेम बोराज् ब्रोज बनाने के काम में यह सीमेन्ट लाया जाता है। यहां पर 10 बैंकर्स् है जो यहां के औद्योगिक व व्यावसायिक समुदाय को धन उपलब्ध कराते हैं। आर. एफ. सी. भी इस क्षेत्र में सक्रिय योगदान और भूमिका प्रदान कर रहे हैं। शिक्षा का अच्छा केन्द्र है। यहाँ पर एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, स्नातक स्तर का बालिका महाविद्यालय, कई उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, अनेक माध्यमिक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, पूर्व प्राथमिक तथा पब्लिक स्कूल हैं। पश्चिमी रेल्वे का मीटर गेज का दिल्ली अहमदाबाद का मध्य रेल्वे स्टेशन है। सड़क मार्ग से राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या आठ का मध्यवर्ती शहर है जयपुर, जोधपुर और उदयपुर यहां से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। 'अ' श्रेणी का अमृतकौर अस्पताल है तथा अजमेर जिले का मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी का मुख्यालय है। राजस्थान का सबसे बड़ा उपखण्ड है तथा ब्यावर की नगर परिषद् राजस्थान में सबसे बड़ी व पुरानी नगर परिषद है। राजस्थान में सबसे पुराना गिरजाघर ब्यावर का है। अतः हर दृष्टि से इसको अलग से जिला बनाया जाता है तो मेरी दृष्टि में कोई भूल नहीं होगी। वास्तव में ब्यावर शहर जिला बनाये जाने के काबिले तारीफ है। यह मगरा, मारवाड़ व मेवाड़ का सिरमोर है। अन्त में मैं यह ही कहना चाहूंगा कि योजना आयोग, भारत सरकार को अजमेर जिला को औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र राजस्थान सरकार की सिफारिश पर घोषित किया जाना चाहिये जिससे ब्यावर शहर को भी औद्योगिक दृष्टि से वे सब सुविधाएं प्राप्त हो सके जो अभी नहीं हो रही है। तथा बिसलपुर से 5 लाख गैलन पानी प्रतिदिन दिया जाना चाहिये जिससे यहां की आबादी को पीने का पानी तथा उद्योगों को पानी मिल सके।

(लेखक माननीय उपजिलाधीश डाक्टर बी. शेखर साहब की प्रेरणा से बादशाह वासुदेव मंगल द्वारा लिखित रचना सेतु स्मारिका हेतु सहर्ष समर्पित।)

ऑफिसर्स सोसायटी, ब्यावर

OFFICERS SOCIETY, BEAWAR

प्रशंसा-पत्र

APPRECIATION CERTIFICATE

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/~~श्रीमती~~/सुश्री बासुदेव मंगल (बादशाह)
~~विभाग~~/संस्था 19, गोपालजी मोहल्ला, ब्यावर ने निबन्ध प्रति. (ब्यावर का इतिहास)
कार्यक्रम में भाग लेकर सराहनीय उपलब्धि अर्जित की है एवं विजेता (तृतीय) रहे।

इस उपलब्धि हेतु इन्हें यह प्रशंसा-पत्र प्रदान किया जाता है।

Secretary
Officers Society

President
Officers Society

Date 2.4.91